२४२. मेहेरबाबा, अजब तेरी प्रभूताई

मेहेरबाबा मेहेरबाबा अजब तेरी प्रभूताई
तमाशा देखनेवाले बने है खुद तमाशाई ॥

ख़ुदीमे ख़ो गये इतने के भूले तेरी ताक़तको
तेरी प्रभुता जो देखी नजर उनकी उठ नही पायी ॥

नही मालूम यहाँ क्या किसको लेना है या देना है ।
मगर देखो 'ख़ुदी'ने अक्ल उनकी कैसे भरमायी ॥

Scanned by CamScanner

ये दुनिया चल रही चलती रहेगी उसकी रहमतपर
न चलवाये उसे कोई न रुकवाये उसे कोई ॥

उसीका काम किसके रहे न रहनेसे नही रुकता
नही तू है तो कोई और है यहाँ कुछ न कमताई ॥

भले कोई सराहे ना सराहे फर्क ना पडता
मेहेरकी मेहेरबानीसे गदा पाये शहंशाही ॥

चलो अच्छा हुवा जो भी हुवा ना सोच मधुसूदन
मेहेरमर्जीको सोचो जींदगीमे फिर न ग़म कोई ॥

Scanned by CamScanner